International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-01-2023, Accepted: 03-02-2023, Published: 23-02-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 42-43

उत्तरकाशी रवांई क्षेत्र के कथाकार 'महावीर रवांल्टा'– एक परिचय

अंजली
शोधार्थी, कुमॉऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

सारांश
उत्तराखण्ड के समकालीन साहित्यकारों में महावीर रवांल्टा अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। प्रसिद्ध साहित्यकार का श्रेष्ठ साहित्य लोक भावना के स्तर पर व्यक्ति और समाज को चेतन कर राह दिखा रहा है। महावीर रवांल्टा गद्यकार, अभिनेता, कवि है। रवांल्टा जी पूरी तरह लोक जीवन में भीगे हुए थे, पहाड़ी लोकजीवन की ऐसी गहरी समझ किसी और में नहीं देखाई देती, इन्होंने अपनी रचना में रवॉई क्षेत्र की संस्कृति, लोकजीवन, लोकपरम्पराओं, लोकगीतों आदि को दिखाया है।
रवांल्टा जी का रचनाकर्म कविता से आरम्भ हुआ और होते–होते अनेक रचनाए कर डाली, इनमें नाटक, उपन्यास, कहानी, रवॉल्टी कविता संग्रह, संग्रह, रवॉई क्षेत्र की लोक कथाऐं, बाल कहानी संग्रह आदि सभी प्रकार की रचनाए सम्मिलित हैं। आपके बहुआयामी व्यक्तित्व एवं हिन्दी साहित्य समृद्ध हुआ।

मूल शब्दः जीवन परिचय, रचना, नाटक, उपन्यास, कहानी, सम्मान

प्रतिभा के धनी एंव लोक साहित्य, संस्कृति, कहानीकार एवं उपन्यासकार तथा नाटककार साहित्य जगत के अनेक विधाओं एक सशक्त हस्ताक्षर है। रवांल्टा जी इसमे वर्षो से काम कर रहे हैं। किसी शब्द की सभ्यता संस्कृति को सजीव रखने की विधा साहित्य से बढ़कर और कोई नही हो सकती है। इसीलिए साहित्य का आधार ही जीवन स्तर मे सुधार साहित्यकारो का काम रहा है। इसी कर्म और कलम के पुजारी प्रसिद्ध साहित्यकारों का काम रहा है। साहित्यकार महावीर रवांल्टा है। इनका श्रेष्ठ साहित्य लोक भावना के स्तर पर व्यक्ति और समाज को जागृत कर एक राह दिखा रहा है।

महावीर रवांल्टा का जन्म सरनौल गाँव मे 10 मई 1966 को हुआ इनकी माता का नाम रूपदेई और पिता श्री टीका सिंह राणा है, उनकी प्रारम्भिक शिक्षा जोशिमाड़ा उत्तरकाशी मे हुई जहाँ रवांल्टा जी, कवि लीलाधर जगूडी व डॉ जग्गू नौटियाल के सानिध्य में रहे। मार्च 1983 मे महावीर रवांल्टा जी की पहली कविता प्रकाशित हुई। बस तब से लेकर महावीर रवांल्टा जी की कलम कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक समीक्षा, लघुकथा, एकाकी, व्यंग्य व लोककथाओं के सृजन में निरंतर चल रही हैं।

रंगकर्म में अपनी रूची के कारण महावीर रवांल्टा जी ने नाटकों के लेखन के साथ अभिनय व निर्देशन में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी कहानी 'बुली ऑखों के सपने' का राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की संस्कार दंग टोली व काल दरपन द्वारा दिल्ली व देहरादून में सफल नाट्य मंचन हो चुका है। 'ननकू नहीं रहा' कहानी पर आधारित नाटक क मंचन खुर्जा बुलंदशहर में किया जा चुका है लोक साहित्य में गहरे लगाव के चलते हुए लोककथा पर आधारित नाटकों का लेखन व मंचन हो चुका हैं।

वर्ष 1995 मे इनकी पहली रवांल्टा कविता 'दरवालू' जनलहर प्रकाशित हुई। देशभर की विभिन्न प्रतिष्ठिपत्र व पत्रिकाओं मे इनकी रचनाओं का प्रकाशन एवं आकाशवाणी व दूरदर्शन मे प्रसारण हो चुका है। अनेक विश्वविद्यालयो में इनके कथासाहित्य पर लघु शोध तथा शोध कार्य हो चुके हैं।

रचनात्मक जीवन

महावीर रवांल्टा जी के 4 उपन्यास, 9 कहानी संग्रह, 1 लघु कथा संग्रह, 4 नाटक, 4 कविता संग्रह, 1 बाल एकांकी संग्रह, 1 बाल नाटक संग्रह, 2 बाल कहानी संग्रह, 5 लोक कथा संग्रह, 1 बाल कविता संग्रह व रवांल्टी कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

उपन्यास: पगडंडियों के सहारे, एक और लड़ाई लड़, आपघर या बबपघर, अपना–अपना आकाश।

नाटक: सफेद घोड़े का सवार, खुले आकाश का सपना, मौरसदार लड़ता है, एक प्रेमकथा का अंत।

कहानी संग्रहः समय नहीं ठहरता, उसके न होने का दर्द, टुकड़ा–टुकड़ा यथार्थ, तेग सिंह रहा, जहर का संघात, भंडारी उदास क्यों थे?, त्याग के बदले, प्रेम संबंधों की कहानियां, महावीर रवांल्टा की प्रतिनिधि कहानियां (कहानी संग्रह)।

लघुकथा संग्रह– त्रिशंकु।

कविता संग्रहः आकाश तुम्हारा होगा, सपनों के साथ चेहरे, तुम कहाँ को चल पड़े, घर छोड़ भागती लड़कियां।

बाल एकांकी संग्रहः ननकू नहीं रहा।

बाल कहानी संग्रहः विनय का वादा, अनोखा जन्मदिन।

बाल कविता संग्रहः सफलता का शिखर।

उत्तराखण्ड की (लोक कथा) लोक संग्रहः दैत्य और पाँच बहनें, ढ़ेला और पत्ता, उत्तराखण्ड की लोक कथायें (भाग–1 व 2)

लोक कथाओं पर आधारित बाल नाटकः पोखू का घमंड।

रवांल्टा कविता संग्रहः गैणी जण आमार सुईन (आसमान जैसे हमारे सपने)।

महावीर रवांल्टा जी कहते हैं कि साहित्य, संस्कृति, लोक भाषा हमारी पहचान है, पहाड़ की विकटता को मैने करीबी से जाना है, इन विकटताओं ने ही मेरा झुकाव सृजनात्मक पहल की तरफ मोड़ा है। मंच, आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से रवांल्टा के प्रचार प्रसार के लिए वे निरंतर प्रयासरत है।

महावीर रंवाल्टा ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के शोषण, दरिद्रता एवं कुरीतियों का चित्र प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है साथ ही उन्होंने शहरी जीवन की पीडा, घुटन, तनाव संघर्ष आदि का चित्रण किया है। इनके साहित्य में पीड़ा, घृणा, अवसाद, कृष्ठा, तनाव, संघर्ष सभी का यथार्थ परक चित्रण हुआ है।

साहित्य और विचारों का घनिष्ठ संबध है इस कारण प्रत्येक साहित्यकार का एक विचार, चिंतन होता है। महावीर रवांल्टा ऐसे रचनाकार है, जिन्होने अपनी समाज में यथार्थ को दिखया है।

महावीर रवांल्टा ने राजनीति, व्यक्तिगत स्वार्थ, साजिश, पारिवारिक विघटन, ईर्ष्या के सहारे अपनी रचनाओ का ताना–बाना बुना है। इसके साथ उनकी रचना में नारी तथा दलित की सार्थकता हैं महावीर रवांल्टा की कहानियां नारी की नियति के ईर्द–गिर्द रची हुई है। नारियों की हताकांक्षा, शोषण, दुःख और संघर्ष पर केन्द्रित करके नारी चेतना लिखा है। इसमें विवाह–विच्छेद, आर्थिक स्वावलम्बन, रूढ़िवादी परिवार व्यवस्था का चित्रण किया गया है, महावीर रवांल्टा की कहानियों ने मानव मन की विमृतियों, जटिलताओं और आशा–आकांक्षाओं का सूक्ष्मता और सहजता से वर्णन हुआ है। स्त्री के प्रति अधिक संवेदनशील है, उनकी कहानियों में स्त्री किसी न किसी रूप में प्रायः मौजूद है, रवांल्टा की कहानियों में कल्पना नहीं बल्कि वास्तविकता यथार्थता है। देशकाल, वातावरण, पात्र चरित्र–चित्रण में कथाकार ने सक्षम मनोवैज्ञानिकता का परिचय दिया है।

'इके रोनु कि तेके' (यहां रहूं कि वहां रहूं) कहानी के द्वारा पहाड़ के पलायन को लेकर रवांल्टी की पहली कहानी लिखी, रवांल्टा जी ने रवाई क्षेत्र की लोक–गाथाओं को लेकर नाटक लिखे, उनके द्वारा लिखा गया नाटक 'सफेद घोड़े का सवार' रवाईं क्षेत्र की लोक गाथा से सम्बन्धित है। महावीर रवांल्टा जी ने रवांल्टी कविता से साहित्य का आरम्भ किया। उनकी रवांई कविता 'गैणी जण आमार सुइन' के बाद 'छपराल' प्रकाशित हो चकी है।

सम्मान एवं पारितोषिक

1. सैनिक एवं उनका परिवेश विषय पर अखिल भारतीय कहानी लेखन प्रतियोगिता में 'अवरोहण' कहानी के लिए कानपुर (उत्तर प्रदेश) में परमवीर चक्र विजेता ले0 कर्नल धन सिंह थापा सुप्रसिद्ध उद्घोषक पद्मश्री जसदेव सिंह एवं एयर मार्शल आर0सी0 वाजपेयी के हाथों पहली बार सम्मान मिला।
2. स्व0 वेद अग्रवाल स्मृति सम्मान (मेरठ)
3. सेठ गोविन्द दास सम्मान (जबलपुर)
4. डॉ0 बाल शौरि रेड्डी सम्मान (उज्जैन)
5. साहित्य गौरव सम्मान (रांची)
6. यमुना घाटी का प्रतिष्ठित तिलाड़ी सम्मान (बड़कोट)
7. जनधारा सम्मान (नैनबाग)
8. अम्बिका प्रसाद दिव्या रजत अलंकरण (भोपाल)
9. उत्तराखण्ड शोध संस्थान– रजत जयंती सम्मान हल्द्वानी।
10. कमलराम नौटियाल स्मृति सम्मान (उत्तरकाशी)
11. तुलसी साहित्य सम्मान (भोपाल)
12. उत्तरखण्ड फिल्म, टेलीविसिओ एवं रेडियो एसोसिएशन सम्मान, उत्तराखण्ड का उदय सम्मान (देहरादून)
13. युवा लघु कथाकार सम्मान (दिल्ली)
14. उत्तर बाल साहित्य संस्थान (अल्मोड़ा)
15. बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र (भोपाल)
16. उत्तराखण्ड बाल कल्याण साहित्य संस्थान (खटीमा)

बाल साहित्य सम्मानों के अलावा देशभर के अर्धशताधिक सम्मान आपको मिल चुके हैं। अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टिट्यूट द्वारा वर्ष 2002 में 'द कंटेम्प्रेरी इज हू' के लिए भी इनको चुना है। रवॉई लोक महोत्सव में 'बर्फियां लाल जुवाँठा' सम्मान 2018 में मिला। 2019 में इन्हें श्रीदेव सुमन सम्मान मिला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. महावीर रवांल्टा, उसके न होने का दर्द– सहयोग प्रकाशन 29/502 ईस्टएण्ड अपार्टमेंट्स मयूर विहार एक्सटेंसन फेज–1 नई दिल्ली
2. महावीर रवांल्टा, कैसे–कैसे लोग–समय साक्ष्य 15 फालतू लाइन, देहरादून
3. महावीर रवांल्टा, समय नहीं ठहरता–तक्षशिला प्रकाशन 98ए हिन्दी पार्क दरियागंज नई दिल्ली
4. महावीर रवांल्टा, जहर का संघात– आर्यन प्रकाशन 132/2 कागज भवन गली बताशान, चावड़ी बाजार दिल्ली
5. महावीर रवांल्टा, टुकड़ा–टुकड़ा यथार्थ– लिटेसी हाउस आई 2/16 मेन अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली
6. महावीर रवांल्टा, तेग सिंह लड़ता रहा– विभोर प्रकाशन 178 ए0 जी0 सी0 आर0 एन्क्लेव, दिल्ली
7. महावीर रवांल्टा, भण्डारी उदास क्यों थे?– सहयोग प्रकाशन 29/502 ईस्ट एण्ड अपार्टमेंन्ट्स मयूर विहार एक्सटेंशन, फेज दिल्ली
8. सफेद घोड़े का सवार– महावीर रवांल्टा (झारीसन प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स)
9. एक प्रेमकथा का अंत– महावीर रवांल्टा (समय साक्ष्य देहरादून)।
10. महावीर रवांल्टा का साक्षात्कार।